

स्नातकोत्तर कला उपाधि (वैदिक अध्ययन )  
( MAVS)

MVS 003 आरण्यक एवम् उपनिषद

सत्रीय कार्य(Assignment)  
(जुलाई 2022 तथा जनवरी, 2023 सत्रों के लिए)



मानविकी विद्यापीठ  
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय  
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110068

**स्नातकोत्तर कला उपाधि (वैदिक अध्ययन )**  
**( MAVS )**  
**सत्रीय कार्य 2022-23**

पाठ्यक्रम कोड : MVS-003 / 2022-23

**छात्र/छात्राओ !**

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य है, इसके लिए 100 अंक निर्धारित हैं। इस सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

**उद्देश्य:** आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं, इसी का मूल्यांकन करना इस सत्रीय कार्य का उद्देश्य है, यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है।

**निर्देश:-** सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए:

1. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम पूरा पता और दिनांक लिखिए।
2. बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे प्रदर्शित है:

अनुक्रमांक:.....

नाम:.....

पता:.....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड:.....

सत्रीय कार्य कोड:.....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड:.....

दिनांक:.....

3. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज़ का प्रयोग करें और उन कागज़ों को अच्छी तरह से बाँध लें।
4. प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।
5. सत्रीय कार्य पूरा करके जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास निर्धारित तिथि तक अवश्य जमा करा दें।

**सत्रीय कार्य जमा करने की अन्तिम तिथि :**

जुलाई 2022 सत्र के लिए : 30 अप्रैल, 2023

जनवरी 2023 सत्र के लिए : 31 अक्टूबर, 2023

विशेष ध्यातव्य :

उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगा :

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें। पुनः इससे सम्बन्धित इकाइयों का अध्ययन कीजिए। अन्त में प्रत्येक प्रश्न के सम्बन्ध में सभी महत्वपूर्ण बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।
2. **अभ्यास** : अपने उत्तर का प्रारूप लिखने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। निबन्धात्मक और टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार का विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरम्भिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ कमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार लिखना चाहिए।
3. यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :
  - क) आपका उत्तर तार्किक एवं कमबद्ध हो।
  - ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्टता हो।
  - ग) दिया गया उत्तर आपकी अभिव्यक्ति, शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो।
  - घ) कोई भी उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक न हो।
  - ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों।
4. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसको साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप ज़ोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दीजिए।
5. **विशेष** : अपने उत्तर की फोटो प्रति/कार्बन प्रति अपने पास अवश्य रखें।

नोट: विश्वविद्यालय के नए नियमानुसार परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं होगी।

## MVS 003 आरण्यक एवम् उपनिषद

(सत्रीय कार्य)

पाठ्यक्रम कोड : MVS-003 .

सत्रीय कार्य कोड : MVS-003 / 2022-23

कुल अंक : 100

नोट : यह सत्रीय कार्य 02 खण्डों में विभक्त है। सभी खण्ड अनिवार्य हैं। 15 अंक के प्रश्नों का विस्तृत उत्तर दीजिए। 10 अंक के प्रश्नों का लगभग आठ सौ शब्दों में उत्तर देना है।

### खण्ड-1

निर्देश- निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए :

15X4=60

1. आरण्यक से क्या समझते हैं? ऐतरेय आरण्यक में प्राण विद्या का वर्णन कीजिए।
2. वृहदारण्यक के वैशिष्ट्य को उदाहरण सहित लिखिए।
3. तैत्तिरीय आरण्यक के कुष्माण्ड होम का वर्णन कीजिए।
4. सिद्ध कीजिए कि आरण्यक प्राणविद्या के स्वरूप का वर्णन करते हैं।
5. ऐतरेय आरण्यक की विषय वस्तु का उल्लेख कीजिए।
6. केनोपनिषद में क्या वर्णन है? विस्तार से लिखिए।

### खण्ड-2

4X10=40

निर्देश: अधोलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. छान्दोग्य उपनिषद में सूर्य की उपासना का क्या विधान है? वर्णन कीजिए।
2. छान्दोग्य उपनिषद के चौथे अध्याय की विषय वस्तु का वर्णन कीजिए।
3. ईशावास्योपनिषद के प्रारम्भिक तीन मंत्रों के आधार पर महत्व का वर्णन कीजिए।
4. सिद्ध कीजिए कि ईशावास्योपनिषद विविध प्रकार के ज्ञान का स्रोत है।
5. मैत्रेयी याज्ञवल्क्य के संवाद का उल्लेख कीजिए।
6. नारद सनत्कुमार संवाद का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
7. कठोपनिषद का मुख्य प्रतिपाद्य का उल्लेख कीजिए।